पढ़ना सीखने के दौरान सटीक अनुमान लगाने का महत्व और इसका विकास

मीनू पालीवाल

प्राथमिक शिक्षा पर नीतिगत ज़ोर और अकादमिक हल्कों में गहन विमर्श के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे कार्यकर्ताओं का अनुभव है कि देश में प्राथमिक शिक्षा कई स्तरों पर उपेक्षित है, परिणाम स्वरूप अनेकों समस्याओं से जूझ रही है। उदाहरण के तौर पर, देश के अधिकतर बच्चे सालों तक स्कूल में रहकर भी पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाते। आम तौर पर शुरुआती कक्षाओं में पढ़ना सीखने को इस तरह के आसान सीढ़ीनुमा कौशल के तौर पर देखा जाता है:

अक्षर → बिना मात्रा वाले शब्द → मात्रा वाले शब्द → वाक्य → अनुच्छेद

जब भी कोई बच्चा पढ़ता है, वो ऐसे कई संकेत देता है, जैसे लिखे हुए शब्द की जगह कोई और शब्द पढ़ना, जिससे यह साफ ज़ाहिर होता है कि पढ़ना केवल सीढ़ीनुमा प्रक्रिया नहीं है। लेकिन चिन्ता का विषय यह है कि अक्सर इन संकेतों को हम अनदेखा कर देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि हम बच्चों में पढ़ने के कौशल की संज्ञानात्मक विकास प्रक्रिया का सही-सही अवलोकन और व्याख्या नहीं कर पाते। संज्ञानात्मक प्रक्रिया से आशय उस अर्थ से है जो बच्चे पढ़ने की प्रक्रिया में निर्मित

फोटो: मीनू पालीवाल

चित्र-1

करते हैं। बच्चों के पढ़ने के तरीके पर खुद के कुछ अवलोकन और शिक्षकों के साथ बातचीत के आधार पर मैंने पाया है कि पढ़ना सिर्फ अक्षर-मात्रा जोड़ना नहीं है, बल्कि पढ़ने की प्रक्रिया में बहुत सारे तत्व शामिल होते हैं, जैसे अनुमान लगाना, पूर्वज्ञान का उपयोग करना इत्यादि; और इन्हें समझने के लिए हमें सजग अवलोकन और अध्ययन की आवश्यकता है। यहाँ इसी विषय पर मैं अपने कुछ अनुभव साझा कर रही हूँ।

पढ़ने की प्रक्रिया को समझना

चित्र-1 कक्षा तीन, मध्य प्रदेश बोर्ड की पर्यावरण की पाठ्यपुस्तक के एक पाठ का है। इस पाठ को मैंने अलग-अलग बच्चों को पढ़ने के लिए कहा और उनके पढ़ने में जहाँ-जहाँ जो-जो समस्याएँ दिखीं, उन्हें दर्ज करती गई। चित्र में आप मेरी टिप्पणियाँ भी देख सकते हैं। अधिकांश बच्चों में इस प्रकार की दिक्कतों को दर्ज किया गया। आइए, इन टिप्पणियों की

सहायता से बच्चों के पढ़ने की प्रक्रिया को गहराई से समझने की कोशिश करते हैं।

इस पन्ने पर आपको दो अनुच्छेद दिखाई दे रहे होंगे। दोनों पैराग्राफ एक ही बच्चे ने पढ़े हैं। पहले अनुच्छेद में आपको काफी कम गलतियाँ दिख रही होंगी जबकी दूसरे में काफी सारी गलतियाँ हैं। अब प्रश्न यह है कि पढ़ना यदि अक्षर-मात्रा पहचानना है तो दोनों अनुच्छेदों को पढ़ने में इतना अन्तर क्यों आया?

शिक्षकों से बातचीत में यह उभरकर आया कि दूसरा पैरा कठिन है। मैंने उनसे इसकी कठिनाई बताने को कहा। एक शिक्षिका ने 'बादाम के छिलकों से पोस्टर', 'लकड़ी के बुरादे से रंगोली बनाई' को चिह्नित किया। मैंने पूछा कि "क्या 'बादाम के छिलकों से पोस्टर' पढ़ना कठिन है?" शिक्षिका ने उत्तर दिया, "नहीं।"

आम तौर पर आधा अक्षर, लम्बे शब्द, रेफ वाले शब्द आदि को पढ़ने के लिए कठिन समझा जाता है। फिर इसे पढ़ने में बच्चे को परेशानी क्यों हुई? शिक्षिका ने जवाब दिया कि "हमारे क्षेत्र में सजावट के लिए बादाम के छिलकों का पोस्टर नहीं बनाते।" इसका मतलब पढ़ने में अक्षर-मात्रा के अलावा, पढ़ी जाने वाली विषय-वस्तु भी मायने रखती है।

मैंने बहुत-से शिक्षकों से इस पाठ पर बातचीत की है। इसमें मेरा उद्देश्य शिक्षकों के सामने इस बात के लिए तर्क प्रस्तुत करना होता था कि पढ़ना केवल अक्षर-मात्रा जोड़ना नहीं होता और हम बच्चों के पढ़ने में जो परेशानियाँ देख रहे हैं, यह पढ़ने के बारे में हमारे दृष्टिकोण और सीखने-सिखाने के तौर-तरीकों से काफी हद तक जुड़ा हुआ है। पढ़ना सीखने के दौरान बच्चे कुछ महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं से होकर गुज़रते हैं। इनमें से एक ज़रूरी और महत्वपूर्ण चीज़ है, अनुमान लगाना।

अक्सर देखने में आया है कि हम अनुमान लगाने को या तो एकदम निरुत्साहित करते हैं या फिर इसे कुछ खास महत्व नहीं देते। शायद शिक्षक यह नहीं समझ पाते कि अनुमान का पढ़ना सीखने में कितना अहम योगदान होता है। जब भी बच्चा लिखे हुए शब्द की जगह कोई और शब्द पढ़ देता है तो हम तुरन्त उसे टोकते हैं। हमें शायद यह सोचने की ज़रूरत है कि आखिर बच्चे ऐसा करते क्यूँ हैं। शायद हम इसलिए तुरन्त सुधार करवा देते हैं क्योंकि हमें लगता है कि बच्चे ध्यान से नहीं पढ़ रहे हैं। दूसरा कारण यह मान्यता हो सकती है कि टोकेंगे नहीं तो बच्चे आगे भी गलतियाँ करते रहेंगे। इन धारणाओं के चलते हमें बच्चों के पढ़ने में अनुमान की भूमिका के प्रति अत्यन्त सजग होने की ज़रूरत है।

अनुमान लगाना - पढ़ने की कुंजी

अनुमान लगाने को हम पढ़ना

सीखने की कुंजी कह सकते हैं। आइए, अनुमान को एक उदाहरण से समझते हैं:

लिखा था – दूध पहुँचाकर देहाती मज़े से रहता था।

पढ़ा गया – दूध बेचकर देहाती मज़े से रहता था।

यहाँ शब्द बदल जाने के बावजूद अर्थ का अनर्थ नहीं हुआ है। इस पर विचार करना स्वाभाविक होगा कि जो शब्द लिखा नहीं है, वह एक बच्चे द्वारा क्यों पढ़ा गया। बच्चे ने कैसे निर्णय लिया कि यही शब्द उपयोग में लाना है? क्या यह मात्र संयोग है? मुझे लगता है कि यह संयोग नहीं हो सकता क्योंकि पूरे वाक्य को यदि पढ़ें तो अर्थ बनता है। जब हम बच्चों को इस तरह से और भी शब्दों को बदलते देखते हैं तो यह बात समझ आती है कि बच्चे अनुमान लगाते हुए पढ़ते हैं। ऐसे अवलोकन से शिक्षक यह जान सकते हैं कि बच्चे द्वारा पढ़ी जा रही विषय-वस्तु उसे समझ भी आ रही है या नहीं। यह भी कहा जा सकता है कि जिस विषयवस्तु में हम बिलकुल भी अनुमान नहीं लगा पाते, वह हमें समझ ही नहीं आ रही होती है। आप स्वयं इस बात को अनुभव कर सकते हैं। यदि आप स्टॉक मार्केट के बारे में कम जानते हैं तो अखबार में स्टॉक मार्केट वाला पन्ना खोलिए और पढ़िए। आप पाएँगे कि आपकी पढ़ने की रफ्तार कम हो गई है और आप उसे समझने में भी परेशानी महसूस कर रहे हैं। यह आपके उस विषय से अपरिचित होने के कारण हो रहा है।

इसी प्रकार हम अक्सर देखते हैं कि यदि हमने कुछ गलत पढ़ लिया, तो हमें तुरन्त या फिर थोड़ा आगे पढ़कर पता चल जाता है कि कहीं कुछ गलती हुई है; जैसे पढ़ा गया, "वह भागते हुए घर मर गया" – अभी यह पता करने का कोई तरीका नहीं है कि गलत पढ़ा है, पर जैसे ही पाठक आगे पढ़ेगा, "फिर उसने एक गिलास ठण्डा पानी पिया" - वह समझ जाएगा कि उसने पढ़ने में कोई गलती कर दी है और वह फिर से उस हिस्से को पढ़ेगा और स्वयं सुधार कर लेगा।

आइए, अब हम उपरोक्त दिए गए दो अनुच्छेदों को बच्चों द्वारा जिस प्रकार पढ़ा गया, उसका एक विश्लेषण करते हैं।

पढ़ने का विश्लेषण

पहला अनुच्छेद

लिखा था – यह

पढ़ा गया – यहाँ

हम जब अनुमान लगाते हैं तो कई बार हमारा अनुमान गलत और कई बार सही होता है। यदि हमें बार-बार अनुमान लगाने के मौके मिलेंगे तो हम बेहतर अनुमान लगाने लगेंगे।

जैसे ऊपर 'यह' को 'यहाँ' पढ़ा गया। बच्चे ने 'यह' के बाद 'पूरे'

शब्द को नहीं पढ़ा, यह भी गौर करने वाली बात है। इसके पहले की लाइन है 'कल से हमारे स्कूल में बहुत चहल-पहल है', हो सकता है कि बच्चे ने अनुमान लगाया होगा कि – 'यहाँ चहल-पहल काफी दिनों तक रहेगी'।

हम बच्चों के अनुमान-कौशल को बेहतर करने के लिए कक्षा में कई गतिविधियाँ भी करा सकते हैं, जैसे एक वाक्य आधा बोलना और बच्चों से उसे पूरा करने को कहना, कहानी का मुख्य पृष्ठ दिखाकर यह पूछना कि कहानी किस बारे में होगी, कहानी जहाँ से बदलती है वहाँ पर बच्चों से पूछना कि आगे क्या होगा, कुछ अधूरे शब्द श्यामपट पर लिखना और बच्चों से उन्हें पूरा करने को कहना।

दूसरा अनुच्छेद

- 'कतरनों' शब्द पर अटकना।
- 'झालर' को 'झलाकर' पढ़ना।
- 'उन्हें' को 'उनमें' पढ़ना।
- 'बादाम के छिलकों का पोस्टर' पढ़ने में समय लगना।
- 'कहीं' को 'कई' पढ़ना।
- 'लकड़ी' को 'लड़की' पढ़ना।
- 'रंगोली बनाई है' यह हिस्सा रफ्तार से पढ़ना।

ऊपर की बातचीत में मैंने आपको बताया था कि कुछ शिक्षकों ने कहा कि "दूसरे अनुच्छेद में कठिन शब्द होंगे इसलिए इतनी सारी गलतियाँ हुईं।" जब मैंने कठिन शब्दों को चिह्नित करने का आग्रह किया तो शिक्षक इस राय पर पहुँच पाए कि यह सन्दर्भ अपरिचित है इसलिए इतनी गलतियाँ हुईं।

बच्चों से बातचीत में पता चला कि 'कतरन' और 'झालर' उनके लिए नए शब्द थे। वे इनके अर्थ नहीं जानते थे। वे इसकी जगह शायद कोई और शब्द उपयोग करते थे।

'उन्हें' को 'उनमें', 'लकड़ी' को 'लड़की', 'कहीं' को 'कई' पढ़ना – यह सब शब्दों के समान दिखने के कारण होता है जिसे हम ग्राफिक समानता भी कहते हैं।

इस पैरा का सन्दर्भ बच्चों के लिए काफी अपरिचित था जिससे अनुमान लगाना मुश्किल था। जैसे-जैसे बच्चा आगे पढ़ता जा रहा था, अर्थ न बन पाने के कारण और भी ज़्यादा गलतियाँ होती जा रही थीं। सन्दर्भ अपरिचित होने के कारण बच्चा केवल अक्षर-मात्रा पर निर्भर होता जा रहा था इसलिए ग्राफिक समानता बड़ी परेशानी के रूप में सामने आई। पहले अनुच्छेद में भी ऐसे शब्द रहे होंगे जिनमें ग्राफिक समानता हो सकती थी परन्तु तब ऐसा नहीं हुआ। यहाँ पढ़ने में पूर्वज्ञान की भूमिका स्पष्टता से समझ आती है।

कैसे पढ़ाया जाए यह पाठ?

हम हमेशा तो ऐसी विषय-वस्तु नहीं पढ़ा रहे होते जिसे बच्चे पहले

से जानते हों, तो इस पाठ को कैसे पढ़ाया जाना चाहिए ताकि बच्चे इसे बेहतर ढंग से पढ़ और समझ पाएँ? मुझे खुशी है कि एक शिक्षिका ने इस प्रश्न पर विचार किया और कहा, "यह पाठ शुरू करने से पहले हमें बच्चों से इस तरह के प्रश्नों पर बातचीत करना चाहिए, जैसे सजावट कब-कब करते हैं? किन वस्तुओं से करते हैं? तुमने किसी और शहर में अलग तरह की सजावट देखी है क्या? आदि।" अभी तक की बातचीत के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि पाठ शुरू करने से पहले सन्दर्भ स्थापित करने के लिए बातचीत एक सशक्त माध्यम प्रतीत होती है। पाठ के शीर्षक, चित्र, पाठ के कुछ ऐसे शब्द या वाक्यांश जिनसे बच्चे अपरिचित हों आदि – ऐसे कई बिन्दुओं और पहलुओं पर आसानी-से बातचीत की जा सकती है। इन पर बातचीत करने के बाद बच्चे पाठ की विषय-वस्तु और शब्दावली से कुछ हद तक परिचित हो जाएँगे। और इसके लिए आवश्यक है कि पहले हम स्वयं उस पाठ को पढ़ लें।

दूसरे पन्ने का विश्लेषण

आइए, अब उसी पाठ के दूसरे पन्ने (चित्र-3) का विश्लेषण करते हैं। इस पन्ने पर जो गलतियाँ की गईं, वे निम्न हैं:

- 'बारह' को 'बाहर' पढ़ा गया।
- 'बाँस' शब्द नहीं पढ़ पाए।
- 'भूपेन' को 'भूपेंद्र' पढ़ा गया।
- 'परिवार की तस्वीरें भी लाए हैं' को 'परिवार की तस्वीरें भी लगाई' पढ़ा गया।

चित्र-2

• 'बहुत' को 'बोहोत' पढ़ा गया।

इस अनुच्छेद को काफी सारे बच्चों से पढ़वाया गया। बहुत-से बच्चों ने यही गलतियाँ कीं। अब हम एक अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि बच्चों से ये गलतियाँ क्यों हुई होंगी।

'बारह' को 'बाहर' पढ़ा गया, दोनों शब्द एक-से दिखने वाले हैं। इस वजह से गलत पढ़ लेने की गुंजाइश बनती है लेकिन सन्दर्भ से पर्याप्त परिचय न होने के कारण पिछले हिस्से से अर्थ न जोड़ पाना भी एक कारण हो सकता है।

'बाँस' शब्द नहीं पढ़ पाए। बाँस से घर भी बनाए जा सकते हैं, इस तरह की कल्पना का अभाव (अपरिचित सन्दर्भ) इस शब्द को न पढ़ पाने का एक कारण प्रतीत होता है। क्या आपको लगता है कि चन्द्रबिन्दु का होना समस्या हो सकती थी? पाठ में

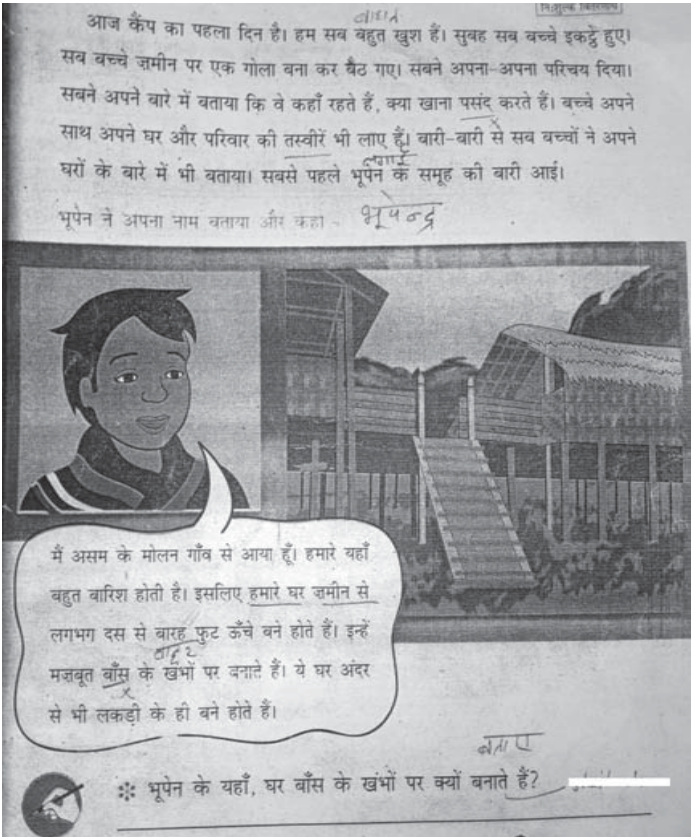
आज कैंप का पहला दिन है। हम सब बहुत खुश हैं। सुबह सब बच्चे इकट्ठे हुए। सब बच्चे ज़मीन पर एक गोला बना कर बैठ गए। सबने अपना-अपना परिचय दिया। सबने अपने बारे में बताया कि वे कहाँ रहते हैं, क्या खाना पसंद करते हैं। बच्चे अपने साथ अपने घर और परिवार की तस्वीरें भी लाए हैं। बारी-बारी से सब बच्चों ने अपने घरों के बारे में भी बताया। सबसे पहले भूपेन के समूह की बारी आई।

भूपेन ने अपना नाम बताया और कहा - भूपेन्द्र

मैं असम के मोलन गाँव से आया हूँ। हमारे यहाँ बहुत बारिश होती है। इसलिए हमारे घर ज़मीन से लगभग दस से बारह फुट ऊँचे बने होते हैं। इन्हें मज़बूत बाँस के खंभों पर बनाते हैं। ये घर अंदर से भी लकड़ी के ही बने होते हैं।

भूपेन के यहाँ, घर बाँस के खंभों पर क्यों बनाते हैं?

चित्र-3

फोटो: मीनू पालीवाल

और भी दो शब्दों में चन्द्रबिन्दु का प्रयोग हुआ है लेकिन वहाँ बच्चे ने चन्द्रबिन्दु सही से पढ़ा है।

'परिवार की तस्वीरें भी लाए हैं' को 'परिवार की तस्वीरें भी लगाई' पढ़ा गया, यहाँ अनुमान में थोड़ी चूक हुई है।

'बहुत' को 'बोहोत' पढ़ा गया, हम लिखते 'बहुत' हैं पर आम बोलचाल में अक्सर 'बोहोत' भी बोल देते हैं।

सागर, मध्य-प्रदेश के बच्चे 'भूपेन' नाम की तुलना में 'भूपेंद्र' से अधिक परिचित हैं इसलिए शायद 'भूपेंद्र' पढ़ा गया हो। हालाँकि, 'भूपेंद्र' एक कठिन शब्द माना जाता है क्योंकि इस शब्द में आधा अक्षर है और बिन्दी है। अक्षर जोड़कर पढ़ने के दृष्टिकोण से भूपेन आसान शब्द है और पढ़ना यदि अक्षर जोड़ना ही होता तो भूपेन ही पढ़ा जाना चाहिए था, लेकिन हुआ इसका उल्टा।

पाठ के अन्त में दिए गए प्रश्न

लिखा था – भूपेन के यहाँ, घर बाँस के खम्बों पर क्यों बनाते हैं?

पढ़ा गया – भूपेंद्र के यहाँ, घर बाँस के खम्बों पर क्यों बनाए?

बच्चे का प्रश्न 'बनाए' पर खत्म हो गया। हालाँकि, उसने देखा था कि आगे 'है' लिखा है, लेकिन मैंने बच्चे के हाव-भाव से महसूस किया कि उसने 'है' को देखने के बावजूद उसे नहीं पढ़ा। शायद उसने भी यही सोचकर दोबारा नहीं पढ़ा कि प्रश्न का अर्थ तो वही है।

बच्चों को पढ़ाते वक्त इस बात का निर्णय करना बहुत महत्वपूर्ण होता है कि बच्चे की मदद कहाँ की जाए, कैसे की जाए और कितनी की जाए। खुद से कोई बात जान जाना, वह 'आहा पल' होता है जिसे हम सीखने की खुशी कहते हैं। बच्चों को भी कक्षा कक्ष में खुद से सोचकर उत्तर ढूँढ़ने का मौका दिया जाना चाहिए, अन्यथा वे कक्षा में निष्क्रिय होकर शिक्षक द्वारा कही गई बातों को ही दोहराते रहेंगे और सीखने के 'आहा पल' को शायद ही कभी महसूस कर पाएँगे।

नोट: यह पूरा विश्लेषण उन बच्चों द्वारा पढ़ने का है जो हिज्जे करके अटक-अटक कर नहीं पढ़ते हैं।

मीनू पालीवाल: अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, सागर, म.प्र. में 2017 से 2022 तक काम किया। इससे पहले वे छह वर्ष तक आईसीआईसीआई बैंक में कार्यरत रहीं। मन में आने वाले सवालों के जवाब की तलाश में वे शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। प्राथमिक कक्षा के बच्चों के साथ काम करने में विशेष रुचि।

सभी चित्र: कश्वी: डिज़ाइन प्रैक्टिशनर बनने की इच्छुक हैं व वर्तमान में बैंगलोर से इसकी पढ़ाई कर रही हैं। मूल रूप से भोपाल की रहने वाली कश्वी अपनी रचनात्मकता का उपयोग समाज के लाभ के लिए करना चाहती हैं।